University Grants Commission, New Delhi Recognized Journal No. 41311
ISSN: Print: 2347-5021 www.research-chronicler.com ISSN: Online: 2347-503X

मैथिली लोकगीत ओ लोकजीवन

जयशंकर झा

मधेपुर शिक्षक प्रषिक्षण महाविद्यालय, मधेपुर, मधुबनी

सार संक्षेप

कवि कोकिल विद्यापति संस्कृतक विद्वान् रहित हुँ लोकक मोन के चिन्हलनि, बुझलनि, गुनलनि आ तदनुसार लोकभाषामे रचना कयलनि। अतएव संगीतमे एहन आकर्षण छैक जे मनुष्येटाके नहि अपितु सभ जीवकेँ आत्म विभोर कए दैत अछि। मिथिलामे तऽ ''मिथिला संस्कार गीत'' जाहिमे गोसाउनिक गीत, सोहर, खेलौना वा 'बेटा पक्षक' मुण्डन उपनयन, बिआह, कोजागरा, दुरागमन आ 'बेटी पक्षक' तुसारी, कन्यादान, चतुर्थी, मधुश्रावणी, दुरागमन इत्यादिक वर्णन भेटैत अछि जे गीत–संगीत सँ लऽ कऽ नवजीवनक रेखा–लेखा देखबैत अछि। एहिमे जीवनक प्रकृति–वर्णन, रूप–चित्रण, आ सौन्दर्यक जे विविधता अछि से अप्रतिम अछि। ई सहज अनुमान अछि जे मनुष्यक वाणी सर्वप्रथम गीतहिक रूपमे प्रतिध्वनित भेल होएत। मिथिलामे बहुबिआह प्रथा बहुत दिन धरि रहल अछि। संगहि संग दरिद्रातक कारणेँ अनमेल विवाहक प्रचलन भेल अछि। एतएव उपरोक्त वाक्यांश सँ मिथिलाक गीत व जीवनक परिचय होइत अछि।

विशिष्ट शब्द : अवगाहन, गुनलनि, बोधगम्य, प्रतिध्वनित, विमोचन, स्वेच्छाचारी, अढ़रन–ढरन।

लोकसाहित्यमे लोकगीतक स्थान–मान प्रमुख अंगक रूपमे मानल जानल जाइत अछि। गीतक अवगाहन कय मानवक मन–प्राण शीतल आओर सरस बनि जाइत अछि। गीत किम्बा संगीत ककरा नहि नीक लगैछ? एहिमे स्वर ताल, लय, गति, झंकार, मादक, एवं सम्मोहन छैक आ सभसँ वेसी छैक मात्रा आ वर्ण विन्यासक जे कर्णप्रिय बनबैत अछि। हमरा लोकनिक आदय उपलब्ध ग्रन्थ थिक 'वेद' जकर गायन तँ प्रसिद्ध अछिये। बैजू बाबरा तँ अपन गायनसँ हरिण केँ आकृष्ट कए लैत छलाह। अभिनव जयदेव विद्यापति हजारक संख्यामे गीत लिखि अमरत्वकेँ प्राप्त कए लेलनि। संस्कृत विद्वान रहितहुँ विद्यापति लोकक मोनकेँ चिन्हलनि बुझलनि, गुनलनि आ तदनुसार लोकभाषामे रचना कयलनि।

'पुरुष परीक्षाक' गीत विद्य शीर्षकमे एकटा एहन संगीतक वर्णन कयलनि अछि जे मृगकेँ कोन कथा, तीन दिनक भूखलि गायके भरल नादि सानि छोड़ि गीत सुनवा ले विवश कए देलनि। अतएव संगीतमे एहनआकर्षण छैक जे मनुष्येटाके नहि अपितु सभ जीवके आत्म विभोर कए दैत अछि। (झा, पृ.–74)

मिथिलामे लोकगीतक परम्परा अत्यन्त प्राचीन अछि। एहिमे मिथिलाक संस्कृति, रीति–रेवाज, शुचि संस्कार, आचार–व्यवहार इत्यादि अक्षुण्ण भेटत जे शास्त्रीय संगीत जका नियमक पाशमे नहि बान्हल आदि। जेना नामहिसँ स्पष्ट अछि लोकगीत सामान्य मनुष्यक बोधगम्य अछि। एतवे नहि एकर भिन्न–भिन्न गीतकार एवं स्वरकार नहि होइत छथि। एकरा सिखवाक आवश्यकता नहि, ई, सहजहिलोक कंठसँ सहजता पूर्वक ग्रहण कएल जा सकैछ।

लोकमानससँ उदभूत तथा प्राकृतिक सौन्दर्यसँ स्नात लोकगीत सतत सतत रसमय स्रोत अछि। कंठके गयबाक लेल आह्वदय के आनन्दक लेल बनल अछि। (त्रिपाठी, पाँचवा भाग, पृ.–1) प्रकृतिसँ घनिष्ठ सम्बन्ध होयबाक कारणेँ लोकगीत महासंगीतक अंश अछि। सहज अनुमान अछि जे मनुष्यक वाणी सर्वप्रथम गीतहिक रूपमे प्रतिध्वनित भेल होएत समयक क्रममे लोकगीत सामाजिक जीवनक सन्निकट

होइत गेल। इएह कारण अछि जे आइ लोकगीतमे हम मानवक विभिन्न समस्या–प्रथाकेँ प्राप्त कय लेने अछि। लोकगीतक द्वारा मानवक शारीरिक एवं मानसिक कष्टक विमोचन सुकर बनि जाइत अछि।

मिथिलाक लोकगीत ततेक व्यापक अछि जे मनुष्यक जन्मसँ मृत्यु पर्यन्तक प्रत्येक अवसरक अनेकानेक गीत तँ अछि ये संगहि प्रकृति परक ईश्वर विषयक शीतक भण्डार कतोक युवक–युवती आ मुग्धा–प्रौढ़ाक कंठमे एखनहु धरि सुरक्षित होएत जखन कि आब अधिकांश गीत लिपिबद्ध भए चुकल अछि। (झा, पृ.–75) ई गीत सभ ते मिथिलाक लोक जीवनक आयतन बनल अछि।

जहिना कविक मानसके प्रतिबिम्बित करैत अछि, तहिना लोकगीत समाजक घात–प्रतिघात सभक वास्तविक रूप व्यक्त करैत अछि। (मिश्र, पृ. –215) जगत जीवनक वास्तविकताक उद्घाटन जे लोकगीतमे होइत अछि ओतेक अन्य साहित्यमे नहि भेटैत। संसारक अन्य क्षेत्र जकाँ मिथिलाक लोकगीतमे ओहिठामक लोक जीवन अथवा लोक संस्कृतिक एक गोट सुन्दर चित्र देखवामे अबैत अछि।

मैथिली लोकगीत सभक माध्यमे हमरा लोकनिके ँ समाजक परम्परा तथा आर्थिक नैतिक–राजनैतिक सुन्दर परिज्ञान प्राप्त होइत अछि।

बहुविवाह मिथिलामे बहुविवाहक प्रचलन बहुत दिन धरि रहल अछि। एहन प्रतीत होइत अछि जे बहु विवाहक अनेक कारणमे एक गोट कारण इहो रहल होएत जे नारीक स्वतंत्रताक विरोधमे किछु स्वेछाचारी पति लोकनि सतत अपन पत्नीके ँ अपन मनोनकूल आचरण करवा लेल बाध्य करैत छल आ एहन नहि कएला परान्त दोसर विवाह कए लैत छल। यथा–

''काजर सँ कजरोटी सोने पत्रछारल रे
ललना, ऑजब भतीजा दुहू आँखि कंगनहम पहिरब रे।
होरिला पुत्र वरू तेजब, वन खंड सेबब रे
ललना रे, बड़ खेनिज के कंगनमा, कंगन नहि देवे न रे।
झोंटा धए झोटिआएब, नैहर पठाएब रे
ललना, करब से दोसर विवाह पलटि नहि आएब रे
खोइछ सँ फेकल कंगनमा कंगन नहि पहिरब रे
ललना, जुनि करब दोसर विवाह, सौतिन जनु लावह रे।'' (मिश्र, पृ.–215)

एहि लोक गीतमे पति अपन पत्नीसँ कहैत अछि जे बालकक जन्मक खुशीमे जँ हमरा बहिन के ँ हाथक कंगना नहिदेव तँ हम दोसर विवाह कए लेब। एहि पर पत्नी तुरंत कंगना निकालिकए दऽ दैत छथि आ दोसर विवाह नहि करबाक प्रार्थना करैत छथि।

प्रस्तुत लोकगीतमे मिथिलाक बहुविवाहक प्रथाक उल्लेख तँ अछिये संगहि संग सपत्नीक सम्बन्धक परिचय सेहो भेटैत अछि।

दरिद्रता–मैथिली लोकगीतमे निर्धनताक अत्यन्त मार्मिक चित्रण भेटैत अछि। भक्तक इच्छा जे शिवक अर्चना निश्चिन्त मोन सँ करी मुदा दरिद्रताक कारणे पूजा कखन आ कोना करताह। एहन परिस्थितिमे केओ सम्बल देनिहार नहि। अतएव भक्त अपन अढरन–ढरन शिवसँ अपन करुण कथा सुनवैत छथि–

भोला केहन केलो दीन
दिन नहि चैन मन रातिओ ने नीन। भोला.....
मन छल शिव शिव जपव भरि दिन
अहँक चरणमे रहितहुँ लय लीन। भोला.....
करितो कोनो दान पुण्य धरक भेलो खीन
समय केहन कियो ककरो ने चिन्ह। भोला.....
छलह कृपालु भोला अहाँ सबदिन
हमरहुँ बेर भोला भेलहुँ कौड़ी–चिन्ह। भोला... (तत्रैव, पृ.–216)

दरिद्रताक कारणे ँ अनमेल विवाहक प्रचलन भेल। कुमारी रहिजाय मुदा बूढ़वर सँ गौरीक विवाह नहि करब तकर मार्मिक चित्रण देख एक गोट प्रचलित लोकगीतमे–

हम नहि अजु रहब एहि आँगन,
जँ बुढ़ होएत जमाए गे माई।
एक तँ बइरी भेल बीध बिधाता,
दोसर धिया केर बाप।
तेसर बइरी भेल नारद वाभन,
जे बूढ़ आनल जमाय गे माई।

मिथिलामे अनमेल विवाहक प्रचलन छल। लोकक आर्थिक स्थिति बहुत दयनीय छल। कवि कोकिल विद्यापतिक ई पद देखल जाय–

पिया मोर बालक हम तरूणी गे
कोन तप चुकलहुँ भेललहुँ जननी।''
(झा, विद्यापति गीतषती)

सेहो एहितथ्य केर संकेत करैत अछि।

भाग्यवाद– ऊपर वर्णित अनमेल विवाहक वर्णन देखि हृदय तेँ अवश्य द्रवित भए जाइत अछि मुदा मिथिलाक ललना लोकनि एकरा भाग्यवाद मनि सहर्ष स्वीकार अंगीकार करैत छथि। तेँ तऽ बूढ़ जमाय के देखला सँ मैना कनैत छथि। मुदा गौरी अपन सखि सभ सँ अपन मायकेँ चुप करबाक आग्रह करैत छथि–

''हम तप कएल एहि भंगिअहि लेल।
दिअ मोर सखी सब जननी मनाय।
दुख–सुख भोगव अवसर पाए,
कर्मक भेटल नहिजाए
की करत मायबाप की करत माय
की करत परिजन हमर सहाय।''

एतवे नहि निरन्तर अपन बूढ़ पतिक दर्शन करैत रहैतक इच्छा रखबैत छथि। एको क्षणक लेल जँ दर्शन नहि भेलतँ मन विकल भए जाइत छनि–

''सखी, भोला कतए गेल
भोलाक दर्शन लए विकल मन भेल।

एहि प्रकारेँ एहि गीत सभमे मिथिलाक महिला लोकनिक मानसिक स्तरक उद्घाटन अत्यन्त मनोवैज्ञानिक ताक संग कएल गेल अछि।

एकर अतिरिक्त मैथिली लोकगीतमे बेटी विक्रय, सती प्रथा, अंग्रेजक प्रभृतिक मार्मिक चित्रण भेटैत अछि। मिथिला लोकगीत तेँ लोकजीवन सँ परिव्याप्त अछि।

अंग्रेज तँ चलि गेल मुदा ओकर किछु काज एहन अछि जे वेरि वेरि स्मरण भए उठैत अछि–

जेवाक ते गेल अंगरेज बड़ा दुख दऽ गेल।
लड़इके लेल हिन्दुस्तानमे पाकिस्तान बनागेल।।
नोआ खाली, चानापुर ओ बाकामे लड़ाक गेल।
हिन्दु–मुसलमान भाई–भाई दुनूमे लड़ाक गेल।
चीनी ओ किरासन तेलक कंट्रोल करागेल।
पैसा जे चलेलक ताइ मे छेदा करा के गेल।''[7]

एहि प्रकारेँ मैथिली लोकगीतक अध्ययन सँ ओहिठामक आन्तरीक आ बाह्य परिस्थितिक परिचय भटैत अछि। एकर अनुशीलन सँ मिथिलाक प्रथा; परम्परा तथा संस्कृतिक विस्तृत वर्णन भेटि जाएत।

संदर्भ सूची :

1. झा, डॉ० रमण, भिन्न–अभिन्न, पृ०–74
2. त्रिपाठी , रामनरेश, कविता कौमुदी (5वाँ भाग) ग्राम्य गीतों का परिचय, पृ०–1
3. झा, डॉ० रमण, भिन्न–अभिन्न, पृ०–75
4. मिश्र, ताराकान्त, मैथिली लोक साहित्य का अध्ययन, पृ०–215
5. तत्रैव, पृ.–216
6. झा, उमानाथ, संपादक : विद्यापति गीतशती, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
7. लाल , डॉ० तेजनारायण, मैथिली लोकगीतों का अध्ययन, पृ०–320